माध्यमिक स्तर के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के मूल्य, अभिवृति व शिक्षण दक्षता का जयपुर जिले के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन

डाक्टर ऑफ फिलासफी की उपाधि
हेतु प्रस्तुत शोध रूपरेखा

शोधकर्ता
शेर सिंह यादव

पर्यवेक्षक
डॉ. राम शरण मिश्रा

शिक्षा विभाग
श्याम विश्वविद्यालय, दौसा, राजस्थान

2020

अनुक्रमणिका

1.	परिचय	1
2.	शोध का औचित्य	4
3.	साहित्य का पुनरालोकन	5
4.	अध्ययन के उद्देश्य	7
5.	परिकल्पनायें	7
6.	शोध में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ	8
7.	अध्ययन अभिकल्प	9
8.	अनुसंधान के उपकरण	9
9.	अध्ययन क्षेत्र	10
10.	न्यादर्श	10
11.	सीमांकन	10
12.	अध्याय योजना	10
13.	संदर्भ ग्रन्थ	11

परिचय

हमारा देश शैक्षिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, नैतिक, आध्यात्मिक आदि सभी दृष्टियों से समृद्ध था। यही कारण था कि हमारा देश सोने की चिड़िया कहा जाता था। इसका अर्थ यह है कि आर्थिक दृष्टि से बहुत समृद्ध था। भारत का व्यापार अनेक देशों से होता था। भारत के व्यापारी अनेक देशों को निर्यात किया करते थे। शैक्षिक दृष्टि से हमारे यहाँ के विश्वविद्यालय में भारत के ही वरन् विदेशों के विद्यार्थी भी अध्ययन करते थे। नालन्दा, तक्षशिला आदि अनेक विश्वविद्यालय अपने स्तर व शिक्षा के लिए जाने जाते थे। यहाँ की संस्कृति, सभ्यता, मूल्य, आध्यात्मिक ज्ञान, नैतिकता व सामाजिकता भी कॉफी विकसित थे। यहाँ के प्राचीन ग्रन्थों में जो साहित्य मिलता है, उनका आज भी कोई समकक्ष नहीं है। विश्वबन्धुत्व, समरसता, सहअस्तित्व मानव मात्र का कल्याण आदि अनेक सर्वमान्य मूल्य व नैतिकता आज की परिस्थितियों में स्वीकार्य है। उस समय के गुरूकुल शिक्षा के केन्द्र थे। उनकी व्यवस्था की जिम्मेदारी राजा व समाज की होंती थी। उन गुरुकुलों में योग्य व प्रतिभावान बालकों को शिक्षण का उत्तरदायित्व दे दिया जाता था।

विद्यालय सहभागिता एवं उपलब्धि के उन्नत स्तर की जरूरत को वैश्विक स्तर पर स्वीकृति प्राप्त है। उन व्यक्तियों को जिनको पोषित मूल्यों एवं आकांक्षाओं के साथ रखने में, विभिन्न प्रकार के शिक्षा के कार्यों एवं प्रकृति को परिवर्तित करने के प्रयासों में, विभिन्न स्तर के स्कूलों की भूमिका, इस जरूरत की पूर्ति करने में प्रतिदर्शित होती है।

भारत में, देश के सम्पूर्ण विकास में "प्राथमिक शिक्षा का सार्वत्रीकरण एवं "दिल्ली घोषणा" का "सर्वशिक्षा अभियान" के संदर्भ में संवैधानिक समर्पण के साथ बहुत ही धनात्मक कदम उठाये जा रहे हैं। उच्च स्तर की आकांक्षाओं तथा विकास के पथ पर आगे बढ़ने के संकल्पों के साथ इक्कीसवीं शताब्दी में प्रवेश करने के लिए यह अतिआवश्यक है। जबकि "प्राथमिक शिक्षा का सार्वत्रीकरण" एवं "सर्वशिक्षा अभियान" जैसे कदम निश्चित उपायों, जिनमें से एक **माध्यमिक शिक्षा** में शोध एवं विकास से सम्बन्धित प्रयास के लिए बाध्य है।

माध्यमिक शिक्षा एक ओर प्राथमिक शिक्षा तथा दूसरी ओर उच्च माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा से जुड़ा हुआ है। यह स्पष्ट है कि प्राथमिक स्तर पर विकसित भर्ती, माध्यमिक स्तर पर प्रवेश को जो कि अन्ततः उच्च माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा में प्रवेश की माँग को बढ़ायेगा। वे लोग जो कि कार्य की दुनिया में प्रवेश करने वाले हैं, की जरूरतों को **माध्यमिक शिक्षा** जो इस शैक्षिक सीढ़ी की एक विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण पायदान है, का उच्च शिक्षा के संस्थानों में प्रवेश के लिए आवश्यक जो साथ ही साथ अन्तिम स्तर है, का सफलतापूर्वक पूर्ण होना जरूरी है। पुनः जैसा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 (संशोधित 1992) में जोर दिया जा रहा है कि "माध्यमिक शिक्षा, छात्रों को विभिन्नित विज्ञान, मानवता एवं सामाजिक विज्ञान के पात्रों से परिचित कराना प्रारम्भ करता है। यह बच्चों को ऐतिहासिक ज्ञान एवं राष्ट्रीय दृष्टिकोण प्रदान करने में, तथा उन्हें एक नागरिक के अधिकार एवं संवैधानिक जिम्मेदारियों को समझने में, समुचित स्तर भी है।"

शैक्षिक योजनाकर्ताओं, शैक्षिक शासकों, शैक्षिक शोधकर्ताओं, शिक्षण अध्यापकों एवं प्रबन्धकों के समक्ष एक ऐसी **माध्यमिक शिक्षा** का चिंतन करने एवं संगठन करने, जो कि दोनों जो इसकी माँग को बढ़ाये साथ ही साथ वास्तविक एवं गुणवत्तापरक शिक्षा उपलब्ध कराने की महान चुनौती है। जबकि वास्तविकता में, उच्च शिक्षा प्राप्त करने या लाभदायक रोजगार प्राप्त करने में एकमात्र रास्ता उनके पूर्ण सक्षमता को विकसित करना है। अतः **माध्यमिक स्तर** पर सभी छात्रों के लिए गुणवत्तापरक शिक्षा उपलब्ध कराना एक महती आवश्यकता है।

सम्पूर्ण विश्व में **माध्यमिक शिक्षा** के पुनर्गठन एवं पुनर्निर्माण के लिए विभिन्न विकल्पों, प्रयासों तथा तकनीकी को सामने रखा जा रहा है। **माध्यमिक शिक्षा** मे शोध में भी इस दिशा में अच्छे प्रयास हो रहे हैं। सम्पूर्ण विश्व की तरह भारत में भी शोध कार्यो, शिक्षा में शोध, माध्यमिक शिक्षा मे शोध को सम्मिलित करते हए, विभिन्न शोध संस्थानों एवं संगठनो मे, क्रमशः बढ़ते हुए आगे जाता हुआ दृष्टिगोचर हो रहा है। जबकि **माध्यमिक शिक्षा** के सुधारों के संदर्भ में शोधो में अध्ययन की दिशा एवं प्रकारों के चलन को सावधानीपूर्वक पहचान कर देखे जाने की आवश्यकता है। प्रत्येक राष्ट्र अपने लिए अपनी सम्पूर्ण राष्ट्रीय विकास की नीतियों के लिए अनुकूल प्रक्रिया निश्चित करने और अनुकूल ढाँचा विकसित करने का समर्थन करने में, शिक्षा पर आधारित दर्शन को सूत्रीकृत करता है। अतः कोई भी राष्ट्र शिक्षा के संदर्भ में विकसित होते हुए वैश्विक चलन की उपेक्षा बरदाश्त नहीं कर सकता है। यह विशेषतया विभिन्न राष्ट्रों के आपस में निर्भरता के कारण, मानवता के इतिहास में पूर्व में कभी भी नहीं देखा गया। इसलिए भारतीय समाज में उभरती जरुरतों को पूरा करने में, वास्तविक तंत्र विकसित करने में गम्भीर चिंतन एवं वैकल्पिक ढाँचा विकसित करने की आवश्यकता है।

स्पष्ट रुप से वैश्विक स्तर पर शिक्षा में आधुनिक विज्ञान और संचार क्रान्ति के प्रयोग की ओर झुकाव तेजी से बढ़ रहा है। भारतीय **माध्यमिक शिक्षा** को इसका विशेष संज्ञान लेना है। कम्प्यूटरों का प्रयोग, जो अब तक केवल विकसित देशों में ही पाया जाता था, अब भारतीय जीवन के लगभग हर पहलू को प्रभावित कर रहा है। इसलिए अन्तर्राष्ट्रीय प्रारुपों और प्रयोगों के रास्ते पर चलकर कम्प्यूटर सहायतित निर्देशनों का जितना जल्दी सम्भव हो शुरु कर देना चाहिए। दूसरे स्पष्ट वैश्विक झुकाव जैसे– ग्रामीण शहरी जनसंख्या के लिए अभिन्न पाठ्यक्रम, शिक्षण के अन्तर अनुशासनिक प्रयास, प्रबन्ध में तंत्रात्मक प्रयास, कार्य एवं शिक्षा की एकता, दूरस्थ शिक्षा, खुली शिक्षा व्यवस्था, अन्तर्राष्ट्रीय समझ और विश्वशान्ति, मानवाधिकार शिक्षा एवं मूल्य शिक्षा जो भारत में अपनाये गये हैं या अपनाये जाने की आवश्यकता है।

शिक्षा में वैश्विक झुकाव जो कि पड़ोसी देशों में अथवा अन्य विकासशील देशों द्वारा अनुसरण किये जा रहे हैं, भारत के लिए भी विशेष रुचि एवं चिंता किये जाने की आवश्यकता

है। तृतीय विश्व के देशों में शैक्षिक सुधार, जो कि अब राष्ट्रीय विकास के संदर्भ में, जो प्रत्यक्ष रुप से राष्ट्रीय एवं ग्रामीण विकास की समस्याओं से सम्बन्धित है, ने **माध्यमिक शिक्षा** के लक्ष्यों को प्राप्त करने में नया आयाम प्रदान किया है। पुनः सामान्य झुकाव जो ज्यादातर विकासशील देशों में परिलक्षित हो रहे हैं, जैसे– **माध्यमिक शिक्षा** का व्यवसायीकरण, शिक्षा का प्रजातंत्रीकरण, आजीवन शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा, शिक्षा में संरचनात्मक परिवर्तन, जनसंख्या शिक्षा, लैंगिक समानता, अर्थ से सम्बन्धित समस्यायें और **माध्यमिक स्कूल अध्यापकों की बदलती भूमिका** ने बढ़ती चिन्ता को प्रदर्शित किया है। साथ ही साथ जो आवश्यकता आधारित दोनों स्वतंत्र कला एवं व्यवसायिक धारा, पाठ्यक्रम योजना, शैक्षिक तकनीकी और मूल्यांकन तरीकों, शिक्षक के तरीकों को सम्मिलित करना, शिक्षक के सुधारात्मक प्रयास, अच्छा स्वास्थ्य एवं पोषण, राष्ट्रीय एकता, अन्तर्राष्ट्रीय समझ और सहयोग का **माध्यमिक शिक्षा** के प्रक्रियाओं पर विशेष बल देने की आवश्यकता है। दूसरे साझा झुकाव जो अन्य विकासशील देशों में, जिसका भारतीय संरचनाओं में एकता और माँग की, प्रयास का सीधा प्रभाव है। अत्यधिक संख्या में लोगों, विशेषकर पिछड़े क्षेत्रों से आने वाले जनसंख्या के लोगों की **माध्यमिक शिक्षा** की सुविधाओं की माँग की पूर्ति के लिए योजनायें बनायी गयी हैं। पुनः नई आवश्यकताओं के अनुकूल अध्ययन की सामग्रियों सहित पाठ्यक्रमों की पुनःसरचना की जा रही है। वैकल्पिक पद्धति, दोनों औपचारिक एवं अनौपचारिक आवश्यकता आधारित गुणात्मक शिक्षा तथा अधिक प्रवेश के लिए विकसित किये जा रहे हैं।

उपर्युक्त झुकाव भारत में हो रहे शोध प्रयासों की **माध्यमिक शिक्षा** के चपंद एवं पुनर्गठन के प्रभाव को ज्ञात करने और यह देखने के लिए कि ध्यानपूर्वक शिक्षाशास्त्रीय अनुभवों के ऑकलन, अंगीकृत किये गये सामाजिक सांस्कृतिक वातावरण में चालू शिक्षा तंत्र में वास्तविक रुप से वैज्ञानिक अध्ययनों पर कदम उठाये जा रहे हैं, विषय में सोचने की आवश्यकता है।

शोध का औचित्य

शिक्षक ही शिक्षा एवं शिक्षण पद्धति का वास्तविक गत्यात्मक शक्ति है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप में आने वाली संतानों पर अपना प्रभाव डालती है। शिक्षक, राष्ट्रीय एव

भौगोलिक सीमाओं को लॉघकर विश्व व्यवस्था तथा मानव जाति को उन्नति के पथ पर अग्रसर करता है, शिक्षक ही उन भावी नागरिकों का निर्माण करता है, जिसके ऊपर राष्ट्र के उत्थान का भार है।

यद्यपि सम्पूर्ण शिक्षा का केन्द्र बिन्दु बालक है, परन्तु शैक्षिक प्रक्रिया के समस्त बिन्दु शिक्षक पर ही अवलम्बित होते हैं। शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण सामग्री, शिक्षण विधि इत्यादि सभी शिक्षक के माध्यम से ही छात्र तक पहुँचते हैं। बालक को उसके सर्वोत्तम रुप में विकसित करने का दायित्व शिक्षक ही निर्वहन करता है। शिक्षक, शिक्षण प्रक्रिया में पथ प्रदर्शक, निर्देशक, सीखने के लिए उपयुक्त निर्माणक, सहयोगी, व्यवस्थापक के रूप में अंद्वितीय स्थान रखता हैं यदि शिक्षक को अपने कर्तव्यों, उत्तरदायित्वों, अपेक्षित गुणों एवं उद्देश्यों का समुचित ज्ञान है, तभी वह छात्रों को सीखने की प्रक्रिया में .. उपयुक्त सहायता कर सकता है अन्यथा वह छात्रों के ज्ञानार्जन में अवरोध व मिथ्या धारणाओं का निर्माता बन जायेगा।

भारतीय समाज में शिक्षकों का स्थान प्राचीन काल से ही सर्वोच्च रहा है। शैक्षिक प्रक्रिया में शिक्षक एवं छात्र दो धुरी हैं, जो परस्पर अन्तःक्रिया करते हैं। अंतःक्रिया की गुणवत्ता एवं प्रकार केवल अधिगम को ही नहीं प्रभावित करता बल्कि छात्रों में विषयवस्तु के प्रति अभिवृत्ति एवं रुचि को भी निर्धारित करता है। यह सत्य है कि शैक्षिक कार्यक्रम में विद्यालय भवन, पाठ्य सहगामी क्रियायें, निर्देशन कार्यक्रम, पाठ्यवस्तु आदि महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं परन्तु जब तक उनमें योग्य शिक्षकों द्वारा जीवन शक्ति नहीं प्रदान की जायेगी तब तक वे निरर्थक रहेंगे।

साहित्य का पुनरालोकन

प्रत्येक क्षेत्र में शोधों की एक परम्परा सी बनी होती है जो सम्बन्धित विषय या अनुक्षेत्र में प्रकाशित शोध ग्रन्थों, शोध प्रबन्धों, पत्रिकाओं या शोध बुलेटिनों में प्रायः प्रतिबिम्बित होती है। ये शोध प्रकाशन पूर्व–सम्पन्न अनुसंधानों को सामूहिक अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं तथा इन्हें सामूहिक रूप से अनुसंधान साहित्य की संज्ञा दी जाती है। अब इस प्रकार के शोध साहित्य में स्वरूप एवं प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से पर्याप्त विविधता देखने को मिलती है। विगत दशकों में शोध प्रबन्धों के अलावा सार संक्षेप (abstracts), तिथि पत्रकों, आब्दिकी (year

book), पुस्तिकाओं, परिदर्शिका (guide), आत्मकथात्मक सन्दर्भग्रन्थ, निर्देशिकाओं तथा अनुदेशनात्मक सहायता साधनों को अनुसंधान साहित्य की श्रेणी में रखने का आग प्रचलन रहा है। इस साहित्य के सम्यक अवलोकन, पुनरीक्षण एवं विवरणात्मक विश्लेषण की प्रक्रिया को शोध की भाषा में सम्बन्धित अध्ययनों (शोधों) का सर्वेक्षण के नाम से पुकारा जाता है।

भारतीय संदर्भ में राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् के तत्वावधान में प्रकाशित शोध पत्रिका 'एजूकेशनल रिव्यू' तथा एम.बी. बुच व अन्य द्वारा सम्पादित 'सर्वे ऑफ़ रिसर्च इन एजूकेशन' जो कई खण्डों में उपलब्ध है, इस प्रकार के शोध साहित्य के महत्वपूर्ण नमूने हैं। इसके अतिरिक्त अनेक भारतीय विश्वविद्यालय सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र के सम्पन्न शोधों को अपेक्षित गति देने के लिए गठित परिषद एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहायता से महत्वपूर्ण संदर्भ साहित्य प्रकाशित करते हैं, जिन्हें सम्बन्धित शोधों के बारे में प्राथमिक सर्वेक्षण हेतु अत्यन्त उपयोगी साहित्य माना जा सकता है।

सम्बन्धित अध्ययनों के सर्वेक्षण की आवश्यकता एवं महत्व–

सम्बन्धित अध्ययनों के सर्वेक्षण का औचित्य खास तौर से इसलिए है कि शोधकर्ता को इसके माध्यम अपने अभीष्ट अनुसंधान क्षेत्र के तहत अर्थपूर्ण प्रश्न की पहचान करने हेतु एक ठोस एवं वस्तुनिष्ठ आधार प्राप्त हो सकता है। इसका सर्वाधिक महत्व इस दृष्टि से भी है कि शोधकर्ता एक पूर्वान्वेषित अनुसंधान क्षेत्र या किसी मुद्दे पर पहले से किये गये शोध द्वारा प्राप्त उत्तर को पुनः शोध का विषय बनाने की दशा में पुनरावृत्ति दोष से बच सकता है।

वर्तमान अध्ययन से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया गया। प्रस्तुत शोध से संदर्भित प्रमुख शोध अध्ययनों का गहन अध्ययन शोधकर्ता द्वारा किया गया, जिनका संक्षिप्त विवरण और उसके शैक्षिक निहितार्थ को अधोलिखित रूप में प्रस्तुत किया गया है।

वर्तमान अध्ययन में मुख्य रुप से तीन चरों (अभिवृत्ति, मूल्य एवं शिक्षण दक्षता) को सम्मिलित किया गया है। इन तीनों चरों पर सम्पन्न हुए अनुसंधान का संक्षिप्त विवरण देना उचित होगा।

अभिवृत्ति के संदर्भ में अनेक अनुसंधान हुए हैं। सीएपी0आई0 (1981), कीनमन (1984), गाडगिल (1981), गोयल (1980), पामर (1980), भटनागर (1979), अरोरा (1978), चन्दर (1976), ग्रेवाल (1976), रेयाज (1996) ने अभिवृत्ति से सम्बन्धित अनुसंधानों को किया।

शिक्षण दक्षता पर अनेक अनुसंधान हुए हैं–

एल्कोमोनी और स्पेंसर (1973), सेन्ट्रा और लिन (1976), कोहेन (1981), क्रफोर्ड और ब्रैडशा (1968), देशपाण्डे एवं भट्ट (1990), मुरे (1983), आरपेन (1983), ओवराल एवं मार्श (1980) तथा देश पाण्डे (2001) ने शिक्षण दक्षता से सम्बन्धित अनुसंधानों को किया।

इन अनुसंधानों में शिक्षकों की दक्षता का मापन करने के लिए विद्यार्थियों के द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन पर बल दिया गया है।

मूल्यों के संदर्भ में अनेक अनुसंधान हुए हैं तथा वर्तमान समय में इस आयाम पर विशेष बल दिया जा रहा है।

बोविक एवं मोर्गन (1962), स्प्रिन्थल एवं बीटन (1966), मस्टेन (1972), पैंफेनार्थ (1974) और जुड (1982), खान (1976) और पीटर (1979), खान (1976) और राजशेखर (1988), शैलजा, विजयालक्ष्मी, साबोजी (2001) ने मूल्य से सम्बन्धित अनुसंधानों को किया।

इन अध्ययनों के निष्कर्षों में एकरुपता का अभाव पाया गया।

अध्ययन के उद्देश्य–

- प्रशिक्षित शिक्षकों की अभिवृत्ति उनके मूल्यों तथा शिक्षण दक्षता को ज्ञात करना।
- अप्रशिक्षित शिक्षकों की अभिवृत्ति उनके मूल्यों एवं शिक्षण दक्षता को ज्ञात करना।
- दोनों वर्गों– प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित शिक्षकों की अभिवृत्ति, मूल्यों एवं शिक्षण दक्षता की तुलना करना।
- प्रशिक्षित की उपयोगिता एवं सार्थकता के लिए सुझाव देना।

परिकल्पनायें –

- प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होता है।
- प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित शिक्षकों के मूल्यों मे कोई अन्तर नहीं होता है।
- प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में कोई अन्तर नहीं होता है।

शोध में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ–

अभिवृत्ति–

साधारणतः अभिवृत्ति से तात्पर्य व्यक्ति के उस दृष्टिकोण से है, जो किसी व्यक्ति, वस्तु, संस्था अथवा स्थिति के प्रति किसी विशेष प्रकार के व्यवहार को इंगित करता है। दूसरे शब्दों में, अभिवृत्तियाँ उन व्यक्तित्व प्रवृत्तियों की ओर संकेत करती है, जिनके द्वारा किसी निश्चित वस्तु, व्यक्ति या स्थिति के प्रति व्यक्ति के व्यवहार का निर्णय लिया जाता है।

प्रस्तुत शोध में अभिवृत्ति से तात्पर्य शिक्षक का अपने अध्यापन व्यवसाय के प्रति, कक्षा शिक्षण के प्रति, बाल केन्द्रित प्रयोगों के प्रति, शैक्षिक प्रक्रिया के प्रति, छात्रों के प्रति तथा अध्यापकों के प्रति झुकाव, तत्परता एवं समर्पण से है, जिसका सीधा प्रभाव उनके मूल्यों एवं शिक्षण दक्षता पर पड़ता है।

मूल्य–

जब मन में किसी सूचना की संगति नही रह जाती तब किसी विचार की प्रासंगिकता नहीं रह जाती, तब भी कुछ संवेदनायें चेतन या अर्धचेतन में रह जाती है। जो हमारे स्वभाव और व्यवहार साँचे को आधारभूत रूप से प्रेरित और रंजित करती हैं। वही हमारा मूल्यार्जन होता है। अतः मूल्य व्यक्ति द्वारा अर्जित होता है। वह ज्ञानार्जन की प्रक्रिया का सार होता है या उसका तत्व होता है। इस प्रकार मूल्यों को वह भाविक संसार कह सकते हैं। जो कि नैसर्गिक क्रिया के रुप में व्यक्ति के चरित्र विकास का आधार बनता है। अतः मूल्यों की मीमांसा करने वाले बताते हैं कि "मूल्य ऐसी स्वयं सम्पूर्ण आकांक्षा या लक्ष्य है जिसकी प्राप्ति या जिसके लिए हममें संतोष उत्पन्न करता है।

शिक्षण दक्षता–

जब किसी व्यक्ति या प्रक्रिया के माध्यम से अपेक्षित फल के प्राप्ति कम से कम साधन या समय के उपयोग से हो जाती है तो इसे प्रभाविकता कहा जाता है।

एक कुशल अध्यापक की प्रभाविकता शिक्षार्थीजनित अधिगम के साक्ष्य पर मालूम की जाती है। प्रभाविक्ता में कार्य के प्रभाव या परिणाम का बोध होता है। सामान्यतः शिक्षण प्रभाविकता को शिक्षण के उत्पाद चरों तथा शिक्षण के प्रक्रम चरों के परिप्रेक्ष्य में परिभाषित

किया जाता है। "संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि शिक्षण प्रभाविकता एक अतिव्यापक सम्प्रत्यय है।" जिसका उपयोग शिक्षक शिक्षण व्यवस्था, शैक्षिक रचना, कौशलों एवं युक्तियों के मूल्यांकन हेतु करता है। दूसरे शब्दों में "शिक्षण प्रभाविकता के अन्तर्गत शिक्षण के अभिष्ट परिणामों, प्रभावों का मूल्यांकन करने की चेष्टा की जाती है। शिक्षण दक्षता के अन्तर्गत निम्न बाते आती हैं।

माध्यमिक शिक्षक–

माध्यमिक शिक्षक से तात्पर्य शिक्षण व्यवसाय में लगे व्यक्तियों से है, जो हाईस्कूल (9वीं एवं 10वीं) की कक्षाओं में शिक्षण कार्य करते हैं।

प्रशिक्षित शिक्षक–

प्रशिक्षित अध्यापकों से तात्पर्य ऐसे अध्यापकों से है जो माध्यमिक स्तर पर शिक्षण हेतु बी0एड0 अथवा एल0टी0 की उपाधि स्पष्ट प्राप्त कर शिक्षण कार्य कर रहे हैं।

अप्रशिक्षित क्षिक्षक–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में अप्रशिक्षित अध्यापकों से तात्पर्य ऐसे अध्यापकों से है जिन्होंने किसी शिक्षा महाविद्यालय से शिक्षण में उपाधि नहीं प्राप्त की है तथा विद्यालयों में अध्यापक के रुप में नियुक्त है या अध्यापन शिक्षा ग्रहण करना चाह रहे हैं या अध्यापक शिक्षण ग्रहण कर रहे हैं।

अध्ययन अभिकल्प–

शोध विधि–

यह शोध वर्णनात्मक अध्ययन की श्रेणी में आता है। इसमें सर्वे विधि की सहायता ली गई है तथा प्राप्त तथ्यों के आधार पर अनुसंधान कार्य को पूरा किया जायेगा।

प्रस्तुत अनुसन्धान के उपकरण–

अनुसन्धान या अध्ययन के सम्बन्धित क्षेत्र से चुने हुए समग्र या प्रतिदर्श के माध्यम से जिन साधनों (means) या प्राविधियों का उपयोग करते हुए आधार सामग्री (data) एकत्र की जाती है उन्हें शोध के उपकरण (research tool) की संज्ञा दी जाती है। ये साधन या प्रविधियों पहले से ही उपलब्ध हो सकती हैं अथवा शोध की आवश्यकतानुसार इन्हें शोधकर्ता

स्वयं निर्मित कर सकता है। इन दोनों ही दशाओं में शोध के उपकरणों का उपयोग तीन महत्वपूर्ण विशेषताओं की अपेक्षा रखता है। ये हैं : प्रासंगिकता (relevence) विश्वसनीयता (reliability), वैधता (validity)।

प्रस्तुत शोध में निम्न उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा।

(अ) अभिवृत्ति मापनी (Teacher Attitude Inventory) – डॉ0एस0पी0 अहलूवालिया

(ब) मूल्य मापनी (Eight Value Scale) – डॉ0 वीना शाह

(स) शिक्षण दक्षता मापनी (Teacher Efficiency Scale) – डी0एन0एस0 चौहान एव कु0 रश्मि जैन

अध्ययन क्षेत्र–

शोध का अध्ययन क्षेत्र जयपुर जिला होगा।

न्यादर्श–

शोध का न्यादर्श माध्यमिक विद्यालय के 500 शिक्षक होंगे। उनमें 250 प्रशिक्षित और 250 अप्रशिक्षित शिक्षक होंगे। इनका चयन यादृच्छिक न्यादर्शन विधि से किया जायगा।

सीगांकन–

प्रस्तुत शोध का सीनांकन इस प्रकार रहेगा–

1. शोध जयपुर जिले तक ही सीमित रहेगा।
2. शोध 500 शिक्षकों पर ही आधारित रहेगा।
3. शोध 3 पूर्व निर्मित उपकरणों से ही किया जायगा।

अध्याय योजना–

अध्याय प्रथम – प्रस्थावना

अध्याय द्वितीय – सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

अध्याय तृतीय – शोध अभिकल्प

अध्याय चतुर्थ – दत्त संकलन एवं विश्लेषण

अध्याय पंचम – शोधनिष्कर्ष एवं शैक्षिक निहितार्थ शोध की उपयोगिता

सन्दर्भ–ग्रन्थ–सूची

अग्रवाल, एस०पी० (1989) : "ईयर बुक ऑफ एजूकेशनल रिसर्च", नई दिल्ली, एन०सी०ई०आर०टी०

अरोड़ा, कमला (198). : "डिफरेन्सेज बिट्वीन इफेक्टिव एण्ड इनइफेक्टिव टीचर्स एनोवेशन इन एजूकेशन", नई दिल्ली, एस० चन्द एण्ड कम्पनी लि०.

अहलूवालिया, एस०पी० (1982) : "टीचर एटीट्यूड इन्वेंट्री", आगरा, नेशनल है साइकोलाजिकल कारपोरेशन.

अग्रवाल, जे०सी० (1995) : "एसेंशियल ऑफ एजूकेशनल टेक्नोलॉजी टीचिंग लर्निंग इनोवेशन इन एजूकेशन", न्यू देहली, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा०लि०

अग्रवाल, मीनाक्षी (1991) : "जॉब सैटिस्फैक्शन ऑफ टीचर्स इन रिलेशन टू सम डेमोग्राफिक वैरिएबल्स एण्ड वैल्यूज", : पी–एच०डी०, एजूकेशन, आगरा विश्वविद्यालय.

आत्रेय, जयशंकर (1989) : 'ए स्टडी ऑफ द टीचर्स वैल्यू एण्ड जॉब सैटिस्फैक्शन इन रिलेशन टू देयर टीचिंग इफेक्टिवनेस एट डिग्री कालेज लेवल", पी–एच०डी०, एजूकेशन, आगरा विश्वविद्यालय.

बाजपेयी, अमिता (1991) : "एन एक्सपेरीमेंटल स्टडी ऑफ एन एजूकेशनल इन्टरवेशन क्यूरीकुलम फॉर वैल्यू डेवेलपमेंट एण्ड इट्स फैसिलिटेटिव इफेक्ट अपान डेवेलपमेंट ऑफ मोरल जजमेंट", पी–एच०डी०,एजूकेशनल, लखनऊ विश्वविद्यालय.

शर्मा, सुमन (1988) : "ए स्टडी ऑफ एटीट्यूड्स एण्ड फ्रस्ट्रेशन इन रिलेशन टू कास्ट, सेक्स एण्ड रेजिडेशियल एरिया एमांग प्राइमरी एण्ड सेकेण्ड्री टीचर्स", पी–एच0 डी0, एजूकेशन, आगरा विश्वविद्यालय.

श्रीवास्तव, विनोदिनी (1990) : "ए स्टडी ऑफ चेंज प्रोननेस एण्ड जॉब सैटिस्फैक्शन एमांग टीचर्स विथ रिफरेंस टू टीचर बैल्यूज", पी–एच0डी0, एजूकेशन, आगरा विश्वविद्यालय.

श्रीवास्तव, मधुबाला (1989) : "द इम्पैक्ट ऑफ टीचर एजुकेशन प्रोग्राम ऑफ लखनऊ यूनिवर्सिटी ऑन प्यूपिल टीचर्स एटीट्यूड एण्ड टीचिंग एफिसिएंसी", पी–एच0डी0, एजुकेशन, लखनऊ विश्वविद्यालय.

श्रीनिवासन वी0 (1992) : "पर्सनालिटी ट्रेट्स ऑफ प्राइमरी स्कूल टीचर्स एण्ड देयर एटीट्यूड टूवर्ड्स टीचिंग", एम0फिल0, एजुकेशन, अन्नामलाई विश्वविद्यालय.

उमा देवी एल0 एण्ड : "एफिसीएन्सी एण्ड एप्टीच्यूट ऑफ रूरल एलीमेन्ट्री स्कूल टीचर्स टूवर्ड्स टीचिंग", इंडियन जनरल ऑफ एप्लाइड साइकोलोजी, वाल्यूम 33 (1), 39–44.

उस्मानी, शाहीन (1988) : "ए स्टडी ऑफ प्रिंसिपल इफेक्टिवनेस इन रिलेशन टू प्रोफेशनल अटेनमेंट, सोसियों इकोनॉमिक बैक ग्राउंड, वैल्यूज ऑफ लाइफ, एण्ड एटीट्यूड टूवर्ड्स टीचिंग", पी–एच0डी0, एजूकेशन, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय.

वर्मा, एम0 (1965) : 'एन इन्ट्रोडक्शन टू एजूकेशनल एण्ड साइकोलॉजिकल रिसर्च', एशिया पब्लिकेशन .

वाधवा, बी0एस0 (1988) : "फैक्टोरियल स्ट्रक्चर ऑफ एटीट्यूड ऑफि टीचर ट्रेनीज टूवर्ड्स माइक्रो–टीचिंग", इंडियन एजूकेशनल रिव्यू, वाल्यूम 23 (4) : 135–143.

वर्मा, ओ0पी0 (1990) : "ए स्टडी ऑफ एटीट्यूट ऑफ टीचर्स एण्ड स्टूडेंट टूवड्र्स पापुलेशन एजूकेशन इन कुमायूँ हिल्स", पी–एच0डी0, एजूकेशन, कुमायूँ विश्वविद्यालय.

यादव, छाँगुर प्रसाद (1988) : "ए स्टडी ऑफ द एटीट्यूड ऑफ टीचर्स टूवड्र्स न्यू सैथेमेटिक्स इन सेकेण्ड्री स्कूल्स आड़ उत्तर प्रदेश", पी–एच0डी0, एजूकेशन, पटना विश्वविद्यालय.

जेमिनी, निरुपमा (1991) : "इफेक्ट अफि टीचिंग स्ट्रेटेनीज आन कन्सेश्चुअल लर्निंग इफिसिएंसी एण्ड रिटेंशन इन रिलेशन डाइवर्जेट थिकिंग", पी–एच0डी0, एजूकेशन, दिल्ली विश्वविद्यालय.

❑❑❑